

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा विश्व ओजोन दिवस – 2017 का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 16 सितम्बर 2017 विश्व ओजोन दिवस (World Ozone Day) का आयोजन किया गया। इस आयोजन में संस्थान के वैज्ञानिकों,



अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए संस्थान के निदेशक (प्रभारी), डॉ. कुलराज सिंह कपूर ने कहा कि ओजोन गैस के प्रति लोगों में जागरूकता लाने के लिए 23 जनवरी 1995 को संयुक्त राष्ट्र संघ की आम सभा में पूरे विश्व में 16 सितम्बर को विश्व ओजोन दिवस के रूप में मनाने का प्रस्ताव पारित किया गया और तब से ही प्रतिवर्ष 16 सितम्बर को विश्व ओजोन दिवस के रूप में मनाया जाता

है। उन्होंने आगे बताया कि उस समय लक्ष्य रखा गया कि 2010 तक पूरे विश्व में ओजोन मित्र वातावरण बनाया जाएगा। हालांकि लक्ष्य अभी भी दूर है लेकिन ओजोन परत बचाने की दिशा में विश्व में उल्लेखनीय कार्य किया जा रहा है। ओजोन परत को बचाने की कवायद का ही परिणाम है कि आज बाज़ार में ओजोन फ्रेंडली फ्रिज, कूलर आदि आ गए हैं। विषय को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने यह भी बताया कि विश्व ओजोन दिवस का इस वर्ष की थीम, 'Caring for all life under the sun' है व इस विषय पर उन्होंने विस्तार से चर्चा की।

कार्यक्रम में उपस्थित विशेष आतिथि, डॉ. एस. एस. रंधावा, 'वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी' विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी विभाग, हिमाचल प्रदेश ने ओजोन के महत्व एवं संरक्षण पर विस्तार में एक पाँवर पॉइंट प्रस्तुति दी।



ओज़ोन परत के बारे में जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि ओज़ोन एक हल्के नीले रंग की गैस होती



है। ओज़ोन परत सामान्यतः धरातल से 10 किलोमीटर से 50 किलोमीटर की उंचाई के बीच पाई जाती है। यह गैस सूर्य से निकालने वाली पैरा-बैंगनी (Ultra-Violet rays) किरणों के लिए एक अच्छे फ़िल्टर का काम करती है और हानिकारक पैरा-बैंगनी किरणों को पृथ्वी पर आने से रोकती है। यदि सूर्य से आने वाली पैरा-बैंगनी किरणें पृथ्वी पर पहुँच जाएं तो पृथ्वी पर घातक प्राणी रोगों (जैसे कैंसर) का कारक बन

सकती है। इससे सभी पेड़ पौधे नष्ट हो जाते हैं, इसलिए ओज़ोन मंडल या ओज़ोन परत को सुरक्षा कवच कहते हैं।

ओज़ोन क्षरण के प्रभाव के बारे में अवगत करवाते हुए डॉ. रंधावा ने बताया कि यह त्वचा को रुखा, झुर्रियों भरा और असमय बूढ़ा भी कर सकता है। यह मनुष्य तथा जंतुओं में नेत्र विकार, विशेषकर मोतिया-बिंद को बढ़ा सकता है। यह मनुष्यों तथा जंतुओं की रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता को कम कर सकता है। पैरा-बैंगनी विकिरण वृद्धि के प्रभाव से पत्तियों का आकर छोटा हो सकता है, अंकुरण का समय बढ़ सकता है व मक्का, चावल, सोयाबीन, मटर, गेहूँ जैसी फसलों से प्राप्त अनाज की मात्रा को भी कम कर सकती है।

कार्यक्रम में उपस्थित कर्मचारी श्री प्रवीण कुमार, अवर श्रेणी लिपिक ने ओज़ोन के महत्व पर अपने ज्वलंत विचार लोगों के सामने रखे,



जिन्हें समारोह में उपस्थित सभी लोगों ने सराहा।

कार्यक्रम के अंत में श्री प्रदीप भारद्वाज, प्रसार अधिकारी, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने समारोह में उपस्थित विशेष अतिथि के साथ-साथ सभी लोगों का धन्यवाद किया।



कार्यक्रम की झलकियाँ



